मिली की साइकिल

प्रथम संस्करण : अक्तूबर 2008 कार्तिक 1930

पुनर्मुद्रण : दिसंबर 2009 पौष 1931

© राष्ट्रीय शैक्षिक अनुसंधान और प्रशिक्षण परिषद्, 2008

PD 10T NSY

पुस्तकमाला निर्माण समिति

कंचन सेठी, कृष्ण कुमार, ज्योति सेठी, टुलटुल विश्वास, मुकेश मालवीय, राधिका मेनन, शालिनी शर्मा, लता पाण्डे, स्वाति वर्मा, सारिका वशिष्ठ, सीमा कुमारी, सोनिका कौशिक, सुशील शुक्ल

सदस्य-समन्वयक – लतिका गुप्ता

चित्रांकन – जोएल गिल

सज्जा तथा आवरण – निधि वाधवा

डी.टी.पी. ऑपरेटर – अर्चना गुप्ता, गौतम चौधरी; अंशुल गुप्ता

आभार ज्ञापन

प्रोफ़ेसर कृष्ण कुमार, निदेशक, राष्ट्रीय शैक्षिक अनुसंधान और प्रशिक्षण परिषद, नई दिल्ली; प्रोफ़ेसर वसुधा कामथ, संयुक्त निदेशक, केन्द्रीय शैक्षिक प्रौद्योगिकी संस्थान, राष्ट्रीय शैक्षिक अनुसंधान और प्रशिक्षण परिषद, नई दिल्ली; प्रोफ़ेसर के. के. वशिष्ठ, विभागाध्यक्ष, प्रारंभिक शिक्षा विभाग, राष्ट्रीय शैक्षिक अनुसंधान और प्रशिक्षण परिषद, नई दिल्ली; प्रोफ़ेसर रामजन्म शर्मा, विभागाध्यक्ष, भाषा विभाग, राष्ट्रीय शैक्षिक अनुसंधान और प्रशिक्षण परिषद, नई दिल्ली; प्रोफ़ेसर मंजुला माथुर, अध्यक्ष, रीडिंग डेवलैपमेंट सैल, राष्ट्रीय शैक्षिक अनुसंधान और प्रशिक्षण परिषद, नई दिल्ली।

राष्ट्रीय समीक्षा समिति

श्री अशोक वाजपेयी, अध्यक्ष, पूर्व कुलपति, महात्मा गांधी अंतर्राष्ट्रीय हिंदी विश्वविद्यालय, वर्धा; प्रोफ़ेसर फरीदा अब्दुल्ला खान, विभागाध्यक्ष, शैक्षिक अध्ययन विभाग, जामिया मिलिया इस्लामिया, दिल्ली; डा. अपूर्वानंद, रीडर, हिंदी विभाग, दिल्ली विश्वविद्यालय, दिल्ली; डा.शबनम सिन्हा, सी.ई.ओ., आई.एल. एवं एफ.एस., मुंबई; सुश्री नुजहत हसन, निदेशक, नेशनल बुक ट्रस्ट, नई दिल्ली; श्री रोहित धनकर, निदेशक, दिगंतर, जयपुर।

80 जी.एस.एम. पेपर पर मुद्रित

प्रकाशन विभाग में सचिव, राष्ट्रीय शैक्षिक अनुसंधान और प्रशिक्षण परिषद्, श्री अरविन्द मार्ग, नई दिल्ली 110016 द्वारा प्रकाशित तथा पंकज प्रिंटिंग प्रेस, डी-28, इंडस्ट्रियल एरिया, साइट-ए, मथुरा 281004 द्वारा मुद्रित।

ISBN 978-81-7450-898-0 (बरखा-सैट)
978-81-7450-858-4

बरखा क्रमिक पुस्तकमाला पहली और दूसरी कक्षा के बच्चों के लिए है। इसका उद्देश्य बच्चों को 'समझ के साथ' स्वयं पढ़ने के मौके देना है। *बरखा* की कहानियाँ चार स्तरों और पाँच कथावस्तुओं में विस्तारित हैं। *बरखा* बच्चों को स्वयं की खुशी के लिए पढ़ने और स्थायी पाठक बनने में मदद करेगी। बच्चों को रोज़मर्रा की छोटी-छोटी घटनाएँ कहानियों जैसी रोचक लगती हैं, इसलिए '*बरखा*' की सभी कहानियाँ दैनिक जीवन के अनुभवों पर आधारित हैं। *बरखा* पुस्तकमाला का उद्देश्य यह भी है कि छोटे बच्चों को पढ़ने के लिए प्रचुर मात्रा में किताबें मिलें। *बरखा* से पढ़ना सीखने और स्थायी पाठक बनने के साथ-साथ बच्चों को पाठ्यचर्या के हरेक क्षेत्र में संज्ञानात्मक लाभ मिलेगा। शिक्षक *बरखा* को हमेशा कक्षा में ऐसे स्थान पर रखें जहाँ से बच्चे आसानी से किताबें उठा सकें।

सर्वाधिकार सुरक्षित

प्रकाशक की पूर्वअनुमति के बिना इस प्रकाशन के किसी भाग को छापना तथा इलैक्ट्रॉनिकी, मशीनी, फोटोप्रतिलिपि, रिकॉर्डिंग अथवा किसी अन्य विधि से पुनः प्रयोग पद्धति द्वारा उसका संग्रहण अथवा प्रसारण वर्जित है।

एन.सी.ई.आर.टी. के प्रकाशन विभाग के कार्यालय

- एन.सी.ई.आर.टी. कैंपस, श्री अरविंद मार्ग, नयी दिल्ली 110 016 फ़ोन : 011-26562708
- 108, 100 फीट रोड, हेली एक्सटेंशन, होस्डेकेरे, बनाशंकरी III स्टेज, बेंगलुरु 560 085 फ़ोन : 080-26725740
- नवजीवन ट्रस्ट भवन, डाकघर नवजीवन, अहमदाबाद 380 014 फ़ोन : 079-27541446
- सी.डब्ल्यू.सी. कैंपस, निकट: धनकल बस स्टॉप पनिहटी, कोलकाता 700 114 फ़ोन : 033-25530454
- सी.डब्ल्यू.सी. कॉम्प्लैक्स, मालीगाँव, गुवाहाटी 781 021 फ़ोन : 0361-2674869

प्रकाशन सहयोग

अध्यक्ष, प्रकाशन विभाग	: पी. राजाकुमार	मुख्य उत्पादन अधिकारी	: शिव कुमार
मुख्य संपादक	: श्वेता उप्पल	मुख्य व्यापार अधिकारी	: गौतम गांगुली

मिली की साइकिल

एक दिन मिली खेल रही थी।
उसने कुछ बच्चों को साइकिल चलाते हुए देखा।
मिली का मन भी साइकिल चलाने को हुआ।
मिली ने मम्मी-पापा से एक साइकिल माँगी।

3

अगले दिन पापा ने मिली को एक साइकिल ला दी।
साइकिल थोड़ी पुरानी थी पर अच्छी हालत में थी।
मिली उसे देखकर बहुत खुश हुई।
लाल रंग की साइकिल पर नीली गद्दी थी।

मिली ने मम्मी से साइकिल सिखाने के लिए कहा।
मम्मी मिली को साइकिल चलाना सिखाने लगीं।
वे दोनों सुबह जल्दी उठकर एक खुले मैदान में गईं।
मिली ने साइकिल सीखना शुरू कर दिया।

मम्मी ने मिली को साइकिल की गद्दी पर बैठाया।
मिली ने साइकिल का हैंडल दोनों तरफ़ से पकड़ लिया।
मिली ने धीरे-धीरे पैडल मारे।
मम्मी हैंडल और गद्दी से साइकिल को पकड़े रहीं।

थोड़ी देर में मम्मी ने साइकिल छोड़ दी।
मिली साइकिल के भार को सँभाल नहीं पायी।
वह साइकिल से गिर गई।
उसके हाथ में थोड़ी-सी चोट लग गई।

मिली थोड़ी देर तक रोई फिर साइकिल चलाने लगी।
मिली दोबारा साइकिल पर बैठी।
मम्मी ने साइकिल सँभाली।
मिली धीरे-धीरे साइकिल चलाती रही।

अगले दिन दोनों फिर सुबह मैदान में पहुँच गईं।
आज मम्मी ने साइकिल पीछे से पकड़ी।
मिली की साइकिल चारों तरफ़ डगमगा रही थी।
मिली ऐसे ही काफ़ी देर तक साइकिल चलाती रही।

उस दिन मिली ने शाम को भी साइकिल चलाना सीखा। मिली अकेले ही साइकिल को हाथ से खींचती रही। उसने साइकिल पर चढ़ने की काफ़ी कोशिश की। मिली अकेले साइकिल पर चढ़ नहीं पाई।

अगले दिन सुबह मिली की साइकिल डगमगाई नहीं।
वह मम्मी की मदद से साइकिल पर चढ़ गई।
मम्मी साइकिल के पीछे-पीछे चल रही थीं।
मिली साइकिल को धीरे-धीरे चलाती रही।

थोड़ी देर बाद मिली साइकिल को दौड़ाने लगी।
मम्मी उसके पीछे-पीछे भागीं।
थोड़ी देर बाद मम्मी ने साइकिल छोड़ दी।
कुछ दूर जाकर मिली साइकिल से गिर गई।

मिली को साइकिल चलाना आ गया था।
मिली साइकिल पर अपने-आप चढ़ नहीं पाती थी।
मिली अपने-आप साइकिल से उतर भी नहीं पाती थी।
मिली को साइकिल से चढ़ना-उतरना सीखना था।

मिली दिनभर साइकिल के बारे में सोचती रहती थी।
उसके हाथ हैंडल की तरह चलते रहते थे।
वह रात को भी सपने में साइकिल चलाती थी।
सुबह होते ही साइकिल लेकर निकल पड़ती थी।

मिली सीधी-सीधी साइकिल चला लेती थी।
उसे साइकिल से उतरने-चढ़ने में मुश्किल होती थी।
वह साइकिल से उतरते समय गिर जाती थी।
मिली को साइकिल ऊँची लगती थी।

साइकिल पर बैठकर मिली के पैर नीचे नहीं टिकते थे।
मिली कई बार गिर चुकी थी।
इसके बावजूद वह खुश रहती थी।
उसने तोसिया को यह बात बताई।

तोसिया ने उसे एक बड़ा-सा पत्थर दिखाया।
मिली पत्थर पर पैर रखकर साइकिल पर चढ़ गई।
अब तो मिली के मज़े आ गए।
दोनों स्कूल भी साइकिल से जाने लगीं।

स्तर 1
स्तर 2
स्तर 3
स्तर 4

सर्व शिक्षा अभियान
सब पढ़ें सब बढ़ें

2093

रु. 10.00

राष्ट्रीय शैक्षिक अनुसंधान और प्रशिक्षण परिषद्
NATIONAL COUNCIL OF EDUCATIONAL RESEARCH AND TRAINING